

Tazkirae Imam Ahmed Raza (Gujarati)



મહારે આ'લા અહલે

# تذکیرہ امام احمد رضا

અમીરે અહલે સુન્નત કા સબ સે પહલા રિસાલા

- |                                |    |                                |    |
|--------------------------------|----|--------------------------------|----|
| ✽ બચપન કી એક હિકાયત            | 04 | ✽ દોરાને મીલાદ બૈઠને કા અન્દાઝ | 14 |
| ✽ હૈરત અંગોઝ કુવ્વતે હાફિઝા    | 07 | ✽ સોને કા મુન્ફરિદ અન્દાઝ      | 14 |
| ✽ સિર્ફ એક માહ મેં હિફઝે કુરઆન | 08 | ✽ ટ્રેન રુકી રહી !             | 15 |
| ✽ બેદારી મેં દીદારે મુસ્તફા    | 11 | ✽ દરબારે રિસાલત મેં ઇન્તિઝાર   | 19 |



સૈને તરીકત, અમીરે અહલે સુન્નત, બાનિયે ઇ'વતે ઇસ્લામી, હાઝરત અલ્લામા મૌલાના અબૂ બિલાલ

મુહમ્મદ ઇબ્નાસ અત્તાર કાદિરી ર-મવી







































करमाने मुस्तफ़ि صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो शप्स मुज पर दुइदे पाक पढना भूल गया वोड जन्त का रास्ता भूल गया. (अ. 1)

ँजतिमाअे जिक्को ना'त, सुन्नतोँ लरे ँजतिमाआत, म-दनी मुजा-करात, दर्स व म-दनी डल्कोँ वगैरा में अ-दबन दो ज़ानू भैठने की सआदत मिल ज़अे.

### सोने का मुन्फ़रिद अन्दाज

सोते वक्त ड़ाथ के अंगूठे को शड़ादत की उँगली पर रभ लेते ता के उँगलियों से लफ़्ज "अद्लाड (الله)" बन ज़अे. आप ढ़ेहमे اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ पैर ड़ैला कर कल्मी न सोते बड़े दाड़िनी (या'नी सीधी) करवट लैट कर दोनों ड़ाथों को मिला कर सर के नीचे रभ लेते और पाँउं मुबारक समेट लेते, ँस तरड़ जिस्म से लफ़्ज "मुड़म्मद (محمد)" बन ज़ाता. (ड़याते आ'ला ड़ज़रत, जि. 1, स. 99, वगैरा) येड़ हँ अद्लाड़ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के सख्ये आशिकों की अदाअें

नामे भुदा हँ ड़ाथ में नामे नभी हँ ज़ात में

मोड़रे गुलामी हँ पडी, लिफ़्मे ड़ुअे हँ नाम दो

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

**द्रेन रुकी रही !**

जनाबे सख्यिद अख्यूब अली शाड़ साड़िब ढ़ेहमे اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ करमाते हँ के मेरे आका आ'ला ड़ज़रत ढ़ेहमे اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ ओक बार पीलीत्मीत से बरेली शरीफ़ ब ज़रीअअे रेल ज़ा रहे थे. रास्ते में नवाब गन्ज के स्टेशन पर ज़ड़ां गाडी सिर्फ़ दो मिनट के लिये ठड़रती है, मगरिब का वक्त ड़ो युका था, आप ढ़ेहमे اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ ने गाडी ठड़रते ही तकभीरे ँकामत करमा

इरमाने मुस्तक़ा عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुइडे पाक न पढा तहकीक वोड  
 भदभप्त हो गया. (उरुदा)

कर गाडी के अन्दर ही निच्यत बांध ली, गालिबन पांय शप्सों  
 ने ँक़्तिदा की उन में मैं त्पी था लेकिन अत्पी शरीके जमाअत  
 नहीं होने पाया था के मेरी नजर गैर मुस्लिम गार्ड पर पडी जो  
 प्लेट फ़ॉर्म पर भडा सज्ज जन्डी छिला रहा था, मैं ने भिडकी से  
 ज़ांक कर देभा के लाँन क्लियर थी और गाडी छूट रही थी,  
 मगर गाडी न चली और हुज़ूर आ'ला हज़रत ने ब ँत्मीनाने  
 तमाम भिला किसी ँजतिराब के तीनों इर्ज़ रक़्अतें अदा कीं  
 और जिस वक्त दाँँ ज़निब सलाम इ़ैरा था गाडी चल दी.  
 मुक्तदियों की ज़बान से बे साप्ता سُبْحَانَ اللَّهِ سُبْحَانَ اللَّهِ سُبْحَانَ اللَّهِ निकल  
 गया. ँस करामत में काबिले गौर येह बात थी के अगर  
 जमाअत प्लेट फ़ॉर्म पर भडी होती तो येह कडा ज़ा सकता था  
 के गार्ड ने अेक बुज़ुर्ग़ हस्ती को देभ कर गाडी रोक ली होगी  
 अैसा न था बल्के नमाज़ गाडी के अन्दर पढी थी. ँस थोडे  
 वक्त में गार्ड को क्या भबर हो सकती थी के अेक अद्लाह عَزَّ وَجَلَّ  
 का महबूब बन्दा इरीज़अे नमाज़ गाडी में अदा करता है.  
 (अैज़न, जि. 3, स. 189, 190) अद्लाह عَزَّ وَجَلَّ की उन पर रहमत  
 हो और उन के सदके हमारी बे हिसाब मग़्दिरत हो.

أَمِينٍ بِجَاهِ النَّبِيِّ الْأَمِينِ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

वोड के उस दर का हुवा भल्के भुदा उस की हुर्द  
 वोड के उस दर से इ़िरा अद्लाह उस से इ़िर गया

(हदाँके बप्शिश शरीक़)

शर्हे कलामे रज्ज : जो कोँ सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार

صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का मुतीओ इरमां भरदार हुवा मभ्लूके

करमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुज पर दस भरतबा सुबह और दस भरतबा शाम दुइडे पाक पढा  
(उसे क्रियामत के दिन मेरी शक़ाअत मिलेगी. (रु/वाक)

परवर दगार उस की धताअत गुजार हो गध और जो कोध  
दरभारे हुजुरे पुरनूर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ से दूर हुवा वोड  
भारगाहे रब्बे गफ़ूर عَزَّ وَجَلَّ से भी दूर हो गया.

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

### तसानिह

मेरे आका आ'ला उजरत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने मुप्तलिह  
उन्वानात पर कमो बेश अेक हजार कितामें लिपी हैं. यूं तो आप  
رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने 1286 सि.हि. से 1340 सि.हि. तक लापों इतवे  
दिये होंगे, लेकिन अइसोस ! के सभ नकल न किये जा सके, जो  
नकल कर लिये गअे थे उन का नाम “अल अतायन्न-भविय्यह इिल  
इतावर-अविय्यह” रभा गया. इतावा र-अविय्या (मुभर्रजा) की 30  
जिल्दें हैं जिन के कुल सइहात : 21656, कुल सुवालात व जवाभात  
: 6847 और कुल रसाधल : 206 हैं. (इतावा र-अविय्या मुभर्रजा, जि.  
30, स. 10, रज इअन्देशन, मर्कजुल औलिया लाहोर)

कुरआन व हदीस, इिकह, मन्तिक और कलाम वगैरा में  
आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ की वुसअते न-जरी का अन्दाजा आप  
رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ के इतावा के मुता-लअे से ही हो सकता है. कयूँके आप  
رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ के हर इतवे में दलाधल का समुन्दर भोजजन है. आप  
رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ के सात रसाधल के नाम मुला-हजा हों :

﴿1﴾ “सुबहानुस्सुबूह अन औबि किजबिन मकबूह” सअ्ये षुदा  
पर जूट का भोडतान भांधने वालों के रद में येह रिसाला तहरीर इरमाया

करमाने मुस्तफ़ा صلى الله تعالى عليه وآله وسلم : जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुज पर दुइद शरीफ़ न पढा उस ने जफ़ा की. (मैराज)

जिस ने मुफ़ालिफ़ीन के दम तोड दिये और कलम नियोड दिये ﴿2﴾ मकामिउल उदीद ﴿3﴾ अल अम्नु वल उला ﴿4﴾ तजल्लिय्युल यकीन ﴿5﴾ अल कौ-क-अतुशशहाबियल ﴿6﴾ सल्लुस्सुयूफ़िल खिन्दिय्यल ﴿7﴾ उयातुल मवात.

ँलम का यशमा हुआ है मोजअन तडरीर में

जब कलम तूने उढाया अै ँमाम अडमद रअ

(वसाँले अफ़िश, स. 536)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

### तर-ज-मअे कुरआने करीम

मेरे आका आ'ला उअरत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने कुरआने करीम का तरजमा किया जो उर्दू के मौजूदा तराजिम में सब पर फ़ाँक (या'नी फ़ौकियत रअता) है. तरजमे का नाम “कन्जुल ँमान” है जिस पर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ के अलीफ़ा उअरते सदरुल अफ़जिल मौलाना सय्यिद मुहम्मद नँमुदीन मुरादआबादी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने अनामे “अअाँनुल ँरफ़ान” और मुफ़रिसरे शहीर उकीमुल उम्मत उअरते मुफ़ती अडमद यार अान رَحْمَةُ الْحَنَّانِ عَلَيْهِ ने “नूरुल ँरफ़ान” के नाम से ढाशिया लिअा है.

### वफ़ाते हसरत आयात

आ'ला उअरत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने अपनी वफ़ात से 4 माह 22 दिन पडले अुद अपने विसाल की अबर दे कर पारल 29 सू-रतुदुइर की आयात 15 से साले ँन्तिकाल का ँस्तिअराज इरमा दिया था.

करमाने मुस्तफ़ा ﷺ : على الله تعالى عليه وآله وسلم : जो मुज़ पर रोज़े ज़मुआ दुइद शरीफ़ पडेगा में क़ियामत के दिन उस की शक़ाअत करेगा. (क़ुरआन)

ईस आयते शरीफ़ा के ईल्मे अल्जद के हिसाब से 1340 अदद बनते हैं और येही ह़िजरी साल के अ'तिबार से सने वक़ात है. वोह आयते मुबा-रका येह है :

وَيُطَافُ عَلَيْهِمْ بِانْبِيَاءٍ مِّنْ قَبْلِهِ  
وَآكَوَابٍ (پ ۲۹، الدهر: ۱)

तर-ज-मअे कन्ज़ुल ईमान : और उन पर यांही के भरतनों और कूओं का दौर डोगा.

(सवानेहे ईमाम अडमद रज़ा, स. 384)

25 स-इरुल मुज़इर 1340 हि. मुताबिक 28 अक्तूबर 1921 ई. को ज़मुअतुल मुबारक के दिन हिन्दूस्तान के वक्त के मुताबिक 2 बज कर 38 मिनट (और पाकिस्तानी वक्त के मुताबिक 2 बज कर 8 मिनट) पर, अैन अजाने ज़मुआ के वक्त हुवा. आ'ला हज़रत, ईमामे अहले सुन्नत, वलिये ने'मत, अज़ीमुल भ-र-कत, अज़ीमुल मर्तभत, परवानअे शम्भे रिसालत, मुजदददे दीनो मिल्दत, डामिये सुन्नत, माहिये बिदअत, आलिमे शरीअत, पीरे तरीकत, भाईसे भैरो भ-र-कत, हज़रते अद्लामा मौलाना अलहाज अल ड़ाईज़ अल कारी शाह ईमाम अडमद रज़ा भान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن ने दाईये अजल को लभौक कडा. اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّا اِلَيْهِ رَاجِعُونَ ॥ आ.प. का मजारे पुर अन्वार मदीनतुल मुर्शिद भरेली शरीफ़ में आज भी ज़ियारत गाहे पासो आम है. अद्लाह ड़जल की उन पर रडमत डो और उन के सदके डमारी भे हिसाब मग़िरत डो.

اٰمِيْنَ بِجَاہِ النَّبِيِّ الْاَمِيْنَ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ

करमाने मुस्तफ़ा : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुज़ पर दुइदे पाक की कसरत करो बेशक येह तुम्हारे बिचे तछारत है. (अ.स.)

तुम क्या गये के रौनके मछड़िल यली गध

शे'रो अहम की जुल्फ परेशां है आज भी

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ عَلَى مُحَمَّدٍ

हरभारे रिसालत में धन्तिजार

25 स-इरुल मुज़फ़्फ़र को बैतुल मुकदस में अक शामी बुज़ुर्ग

رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने ज्वाब में अपने आप को हरभारे रिसालत

مِنْ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ में पाया. सहाबअे किराम الرضوان عَلَيْهِمُ हरभार में

छाजिर थे, लेकिन मजलिस में सुकूत तारी था और औसा मा'लूम

होता था के किसी आने वाले का धन्तिजार है, शामी बुज़ुर्ग

رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने बारगाहे रिसालत صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ में अर्ज की :

हुज़ूर ! (صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ) मेरे मां बाप आप पर कुरबान हों

किस का धन्तिजार है? सय्यिदे आलम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने धर्शाद

इरमाया : हमें अहमद रजा का धन्तिजार है. शामी बुज़ुर्ग ने अर्ज

की : हुज़ूर ! अहमद रजा कौन हैं? धर्शाद हुवा : हिन्दूस्तान में

भरेली के बाशिन्दे हैं. बेदारी के बा'द वोह शामी बुज़ुर्ग رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ

मौलाना अहमद रजा رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ की तलाश में हिन्दूस्तान की

तरफ़ यल पडे और जब वोह भरेली शरीफ़ आये तो उन्हें मा'लूम

हुवा के इस आशिके रसूल का उसी रोज़ (या'नी 25 स-इरुल

मुज़फ़्फ़र 1340 हि.) को विसाल हो युका है. जिस रोज़ उन्हीं ने

ज्वाब में सरकारे आली वकार صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को येह कहते

सुना था के "हमें अहमद रजा का धन्तिजार है." (सवानेहे ईशान



(طبرانی) : کرمانہ مستفاد علیہ والہ وسلم : तुम जहां भी हो मुज पर दुइद पढो के तुम्हारा दुइद मुज तक पढीयता है.

अहमद रजा, स. 391) अल्लाह उज्जुलु अउर उन के सहके उमारी बे हिसाब मगिरत हो.

أَمِينِ بِجَاهِ النَّبِيِّ الْأَمِينِ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

या ईलाही जब रजा प्वाबे गिरां से सर उदाये

दौलते बेदारे ईशके मुस्तफा का साथ हो

(हदाईके बफिशिश शरीफ)

أَمِينِ بِجَاهِ النَّبِيِّ الْأَمِينِ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

सगे गौसो रजा

मुहम्मद ईत्यास कादिरि २-अवी

हफता 25 स-इरुल मुजुहुर 1393 हि.

(अ मुताबिक 31-3-1973)

### येह रिसाला पढ कर दूसरे को दे दीजिये

शादी गभी की तकरीबात, ईजतिमाआत, आ'रास और जुलूसे मीलाद वगैरा में मक-त-अतुल मदीना के शाअेअ कर्दा रसाईल और म-दनी झूलों पर मुशतमिल पेम्फलेट तकसीम कर के सवाब कमाईये, गाहकों को ब नित्यते सवाब तोहफे में देने के लिये अपनी दुकानों पर भी रसाईल रबने का मा'मूल बनाईये, अफ्बार इरोशों या बख्यों के जरीअे अपने महल्ले के घर घर में माहाना कम अज कम अेक अदद सुन्नतों बरा रिसाला या म-दनी झूलों का पेम्फलेट पढीया कर नेकी की दा'वत की धूमें मचाईये और पूब सवाब कमाईये.